रिकॉर्डः—रात के राही थक मत जाना.... ॐ पिताश्री 29/5/62

ओमशान्ति। मन्मनाभव का अर्थ तो समझ गए हो। मन्मनाभव कहने से कोई भी सुनेंगे तो फिर भी समझेंगे यह गीता के महावाक्य। अगर कहेंगे शिवबाबा कहते हैं मुझ परमपिता **p.** को याद करो तो समझेंगे शायद यह अपने लिए कहते हैं। पता नहीं शिव कौन है, उनका शास्त्र पता नहीं कौन—सा है। बाबा मन भव का अर्थ भी समझाते हैं। मुझ अपने परमपिता **P.** को याद करो और मद्याजीभव। चतुर्भुज विष्णुपुरी को याद करो। बाप बच्चों को समझाते हैं यह तो जानते हो अभी देवी—देवता धर्म की स्थापना हो रही है। अभी हैं अनेक धर्म सभी धर्म एक नहीं हो सकते। सभी आत्माएँ भी एक नहीं हो सकती। हरेक आत्मा को अपना2 पार्ट मिला हुआ है। हरेक आत्मा अपने2 ड्रामा के पार्ट अनुसार शक्तिवान भी है। ज़रूर देवी—देवता धर्म वाली आत्मा शक्तिवान होनी चाहिए। उन्हों का ही 84 जन्मों का पार्ट है। कोई2 को बहुत थोड़ा पार्ट बना हुआ है ..... और कितने धर्म हैं 3½ सौ करोड़ आत्माएँ हैं। इसलिए सभी आत्माएँ यहाँ हैं। ऐसे नहीं कि देवी—देवता धर्म की स्थापना करने अथवा देवता धर्म की सोल ऊपर से आती है। नहीं, वो तो यहाँ ही है और धर्मों की जब स्थापना होती है तो आत्माएँ ऊपर से आती हैं। क्राइस्ट आवेगा तो उनके धर्म की सभी आत्माएँ ऊपर से आवेंगी। क्राइस्ट के पिछाड़ी उन्हों को भी आना पड़े। देवता धर्म वाले तो यहाँ ही हैं। जो भी धर्म स्थापन करने वाले हैं उनकी आत्माएँ ऊपर से आती हैं। हम जो धर्म स्थापन करते हैं उनकी आत्माएँ ऊपर से नहीं आती हैं। देवताओं की पूजा तो बहुत करते हैं। उनमें कोई हमारे धर्म के पहले वाले हैं। कोई पीछे वाले हैं। जो पीछे आते हैं तो हम समझते हैं यह वैकुण्ठ में आ न सकेंगे। ऐसे नहीं कि 33 करोड़ त्रेता तक हो जाते हैं। यह तो इस समय गाते हैं 33 करोड़ देवताएँ हैं। जो पिछाड़ी में आने वाले हैं वो शुरू में आ नहीं सकते। वो ज्ञान न लेंगे। ज्ञान पहले वाले सिकीलधे ही लेंगे। सारी छांट होती है। भक्तिमार्ग वाली आत्माएँ पीछे आवेंगी। सतयुग त्रेता वाली आत्माएँ ही आकर ज्ञान लेंगी। यह विचित्र बातें हैं ना और कोई भी समझ नहीं सकते। हमारी आत्माएँ सभी यहाँ हैं उनमें फिर छांटते हैं। सिकीलधों को झट कशिश होगी। वो कोई ऊपर से नहीं आवेंगे। ऐसे भी नहीं कि यहाँ जो शुरू से हैं वो सिकीलधे हैं, नहीं। तुम देखते हो पिछाड़ी में आए हुए नये पुरानों से भी आगे जा रहे हैं। कोई देरी से भी आवेंगे। जिसका जिस समय पार्ट है उसी समय आकर बजाते हैं। जैसे भ्रमरी कीड़ों को ले आती है। तुम भी हो भ्रमरियाँ। तुम कीड़ों को ले नहीं आते हो। तुम्हारे पास कशिश से कीड़े आवेंगे। उनको तुम भू2 करते हो। और धर्म वालों की तो शुद्ध आत्माएँ ऊपर से आती हैं। यह तो अशुद्ध आत्माओं को शुद्ध बनाने मेहनत करनी पड़ती है। तुम्हारी बातें ही बिल्कुल न्यारी हैं। दुनिया यह भी नहीं जानती कि देवता धर्म प्रायःलोप है। और तो सभी धर्म मठ पंथ है देवताओं की पूजा करते हैं; परन्तु ..... बिल्कुल नहीं है। अभी हम जानते हैं यहाँ कल्प पहले मुआफिर वो ही आवेंगे। ..... आती है विघ्न पड़ते हैं; क्योंकि यहाँ पवित्र बनना पड़ता है और धर्म वालों को थोड़े ही मेहनत करनी पड़ती है। इस धर्म की स्थापना में कितनी मेहनत है। कितने शास्त्र बनाए हैं .... पंथ है। एक/दो को ज्ञान देने वाले हैं। हमारा कोई मनुष्य गुरु..... मान है। माला की कितनी पूजा होती है। कितना सिमरते हैं। ..... अनेक प्रकार के मंत्र कैसे मिलते होंगे। अर्थ कुछ भी नहीं .....विद्वान—पंडित नहीं जानते। तुम बच्चे जानते हो कि यह ब्रह्मा .....

तो कुल में भी माला हुई। अवस्था और योग अनुसार समझ सकते ....यहाँ की ही माला ट्रान्सफर हो रुद्रमाला बनेगी। फिर रुद्र माला ....सकी भी तो माला है ना। सिजरे होते हैं ना। हरेक नयामत का सिजरा। बड़े .... क्लास नाम है बी.के. ब्रह्मा की कुमारियाँ। जो सबसे उत्तम हैं। तुम्हारे ही मंदिर बने हुए .....

कुंवारी कन्या नाम पूरे हैं। थोड़ी2 बातें ठीक हैं। इसको कहा जाता है आटे में लून प्रायः है। तुम जानते हो अधरकुमारी कभी आई थी। 5000 बरस पहले आई थी। जिन्हों के ही मंदिर बने हैं। आदिदेव आया था। प्रजापति ब्रह्मा द्वारा नई दुनिया अथवा प्रजा रची। वास्तव में नई दुनिया यह है ब्राह्मणों की। यहाँ की एक2 बात सबसे न्यारी है। राजधानी स्थापन हो रही है। योग और ज्ञान से लाइट और माइट का ताज मिलता है। देवताओं को पवित्र **His Holiness, His Majesty** भी कहा जाता है। वो तुम बनते हो। वहाँ कहा ही जाता है महाराजा–महारानी। तुम यहाँ आए हो महाराजा–महारानी बनने लिए। यह बातें कोई भी शास्त्र में नहीं हैं। हमारे लिए तो सभी धारणा आदि दूर ..... है। उनको फेंकना पड़ता है। ऐसे मत समझो हम भूल सकते हैं। अभी अपन जानते हैं हमारे लिए नई राजधानी बन रही है। यहाँ तो प्रजा का राज्य है। सभी अंधे के औलाद अंधे हैं और सभी धर्म वाले तो जानते हैं हमारा धर्म फलाना है। किसने और कब स्थापन किया। देवता धर्म वाले ही अपने धर्म को भूले हैं। कोई को पता नहीं है। हाँ, इतना कहेंगे गीता भारत का शास्त्र है। फिर कह देंगे वेद सबसे ऊँचे हैं। वास्तव में गीता है माई बाप। बाकी सभी शास्त्र है गीता के पत्ते। थुर देवी–देवता धर्म का है। अगर कोई अपने धर्म वाला न होगा तो माथा मारने से भी समझेंगे नहीं। मानेंगे नहीं। कहेंगे हम फलाने को मानते हैं। वास्तव में मानना चाहिए अपने धर्म वाले को। मुख्य है ही 4 धर्म और उनके 4 शास्त्र। कहते हैं ना धरती 4 टाँगों पर खड़ी रहती है। एक टाँग टूट गई है; परन्तु इसका कोई अर्थ थोड़े ही समझते हैं। आगे हम भी तोते मुआफिक सुनते थे। 4 धर्म तो ठीक है। डीटिज़्म फिर इस्लामिज़्म। क्षत्रीज़्म नहीं कहा जाता है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, देवता यह तीनों ही धर्म एक बाबा स्थापन करते हैं। ब्राह्मण यहाँ है जो फिर ट्रान्सफर होते हैं देवता धर्म में। पुरानी आत्मा को हम ट्रान्सफर करते हैं। शूद्र से ब्राह्मण धर्म में। ब्राह्मण से फिर देवता धर्म में आना है। कितनी अच्छी2 प्वाइंट्स हैं जो धारण करनी बहुत मेहनत है। तो कीड़े का मिसाल यहाँ का है। मनुष्य से देवता बनते हैं। ..... ब्राह्मण। ब्राह्मण से फिर देवता बनाते हैं। हमारे धर्म में कितनी डिफीकल्टी है। ऐसी2 महीन प्वाइंट्स कोई सभी नहीं धारण कर सकते। जो सर्विस में लगे रहते हैं उनके पास धारणा रहती है। दान नहीं करते हैं गोया समझाते नहीं हैं। बेसमझ पास धारण नहीं होती है। समझानी तो बहुत सहज है। मनुष्य से देवता बनाना पड़ता है। देवताएँ सतयुग में होते हैं। कलियुग को बदल सतयुग होना है। सतयुग में बाबा ही करेगा। सतयुग को कहा जाता है ..... पुरी। फिर उसमें खाद पड़ती आई है। पहले खाद पड़ती है चाँदी की फिर ताँबे की। फिर ..... भी खाद पड़ी है। जभी सोना जलावें तब वो शुद्ध बने। शुद्ध बनकर ..... बहुत अनेक जन्मों की पुरानी खल। इनको तो छोड़ना है। वहाँ ऐसे नहीं ..... शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। वह तो पुरानी जूती है। आत्मा और शरीर दोनों .... रिफाइननेस में धारण कर समझाना है। न समझ में आए तो .... सागर मंथन करते ही रहना है। ऐसे नहीं वहाँ मूवी बाहर गए .... रहना है। नई2 प्वाइंट्स रिप्लेस होती है तब तो कहते .... सो तो ज़रूर पहले अलफ बे था। अभी तो गुह्य होता .... अच्छी तरह समझो। खुशी तो रहती है ना। बाबा नए वैकुण्ठ की ..... इतना वहाँ पावेंगे। ऐसे नहीं एक का उद्धार हो जाय तो तुम उनको ..... नहीं है जो करेंगे सो पावेंगे। शास्त्रों में बहुत फालतू बातें पढ़कर ..... ते हैं सन्यासियों का भी हम पूछ पकड़ लेंगे। तुम भी कहते हो ..... देखेंगे। बाबा जावेंगे परमधाम हम भी परमधाम जावेंगे। अच्छा! ॐ